# Maa Kali Kavacham and Dashakshari Kali Vidya



## ।।भगवती काली कवचम् एवं दशाक्षरी विद्या।।

गुरु मंत्र-दीक्षा, समस्या के समाधान एवं कार्य सिद्धि हेतु यज्ञ, पूजा एवं अनुष्ठानादि करवाने के लिये सम्पर्क करें- आचार्य राज वर्मा जी।

**Contact-** +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

**Email-** mahakalshakti@gmail.com



**For more info visit---**

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

श्रीनारायण बोलेः– नारद! मैं दशाक्षरी महाविद्या तथा तीनों लोकों में दुर्लभ उस गोपनीय कवच का वर्णन करता हूं, सुनो।

'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कालिकायै स्वाहा।' यही दशाक्षरी विद्या है। इसे पुष्करतीर्थ में सूर्यग्रहण के अवसर पर दुर्वासा ने राजा सुचन्द्र को प्रदान किया था। उस समय राजा सुचन्द्र ने दस लाख जप करके मंत्र सिद्ध किया और इस उत्तम कवच के पांच लाख जप से ही वे सिद्धकवच हो गये। तत्पश्चात् वे अयोध्या में लौट आये और इसी कवच की कृपा से उन्होंने सारी पृथ्वी को जीत लिया। इसी कवच के प्रभाव से पृथ्वीपति मान्धाता सप्तद्वीपवती पृथ्वी के अधिपति हो गये थे। इसी के बल से प्रचेता और लोमेश सिद्ध हुए थे तथा इसी के प्रभाव से सौभरि

और पिप्पलायन योगियों में श्रेष्ठ कहलाये। जिसे यह कवच सिद्ध हो जाता है, वह समस्त दुर्लभ सिद्धियों का स्वामी बन जाता है। सभी महादान, तपस्या और व्रत इस कवच की सोलहवीं कला की भी बराबरी नहीं कर सकते, यह निश्चित है। जो इस कवच को जाने बिना जगज्जनी काली का भजन करता है, उसके लिये एक करोड़ जप करने पर भी यह मंत्र सिद्धिदायक नहीं होता।



समस्त यम नियमों का पालन करते हुए मंत्र एवं कवच को सिद्ध करने से समस्त घोर-आपदाओं का विनाश होता है तथा धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की प्राप्ति होती है। प्रारम्भिक पूजन एवं ध्यान उपरान्त् भगवती का जपारम्भ करें। इनके साथ भगवान् महाकाल का दशांश जप अवश्य करना चाहिये।

## कवचम्ः-

### नारद उवाचः-

कवचं श्रोतुमिच्छामि तां च विद्यां दशाक्षरीम्।

नाथ त्वत्तो हि सर्वज्ञ भद्रकाल्याश्च साम्प्रतम्।।

नारायण उवाचः-

श्रृणु नारद वक्ष्यामि महाविद्यां दशाक्षरीम्।

गोपनीयं च कवचं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कालिकायै स्वाहेति च दशाक्षरीम्।

दुर्वासा हि ददौ राज्ञे पुष्करे सूर्यपर्वणि।।

दशलक्षजपेनैव मंत्रसिद्धिः कृता पुरा।

पंचलक्षजपेनैव पठन् कवचमुत्तमम्।।

बभूव सिद्धकवचोऽप्ययोध्यामाजगाम् सः।

कृत्स्नां हि पृथिवीं जिग्ये कवचस्य प्रसादतः।।

नारद उवाचः-

श्रुता दशाक्षरी विद्या त्रिषु लोकेषु दुर्लभा।

अधुना श्रोतुमिच्छामि कवचं ब्रूहि मे प्रभो।।

नारायण उवाचः-

श्रृणु वक्ष्यामि विप्रेन्द्र कवचं परमाद्भुतम्।

नारायणेन यद् दत्तं शूलिने पुरा।।

त्रिपुरस्य वधे घोरे शिवस्य विजयाय च।

तदेव शूलिना दत्तं पुरा दुर्वाससे मुने।।



दुर्वाससा च यद् दत्तं सुचन्द्राय महात्मने।

अतिगुह्यतरं तत्त्वं सर्वमंत्रोघविग्रहम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कालिकायै स्वाहा मे पातु मस्तकम्।

क्लीं कपालं सदा पातु ह्रीं ह्रीं ह्रीमति लोचने।।

ॐ ह्रीं त्रिलोचने स्वाहा नासिकां मे सदावतु।

क्लीं कालिके रक्ष रक्ष स्वाहा दन्तं सदावतु।।

ह्रीं भद्रकालिके स्वाहा पातु मेऽधरयुग्मकम्।

ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं कालिकायै स्वाहा कण्ठं सदावतु।

ॐ क्रीं क्रीं क्लीं काल्यै स्वाहा स्कन्धं पातु सदा पातु मम।।

ॐ क्रीं भद्रकाल्यै स्वाहा मम वक्षः सदावतु।

ॐ क्रीं कालिकायै स्वाहा मम नाभिं सदावतु।।

ॐ ह्रीं कालिकायै स्वाहा मम पृष्ठं सदावतु।

रक्तबीजविनाशिन्यै स्वाहा हस्तौ सदावतु।।

ॐ ह्रीं क्लीं मुण्डमालिन्यै स्वाहा पादौ सदावतु।

ॐ ह्रीं चामुण्डायै स्वाहा सर्वांगं मे सदावतु।।



प्राच्यां पातु महाकाली आग्नेयां रक्तदन्तिका।

दक्षिणे पातु चामुण्डा नैर्ऋत्यां पातु कालिका।।

श्यामा च वारुणे पातु वायव्यां पातु चण्डिका।

उत्तरे विकटास्या च ऐशान्यां साट्टहासिनी।।

ऊर्ध्वं पातु लोलजिह्वा मायाद्या पात्वधः सदा।

जले स्थले चान्तरिक्षे पातु विश्वप्रसूः सदा।।

इति ते कथितं वत्स सर्वमन्त्रौघविग्रहम्।

सर्वेषां कवचानां च सारभूतं परात्परम्।।

सप्तद्वीपेश्वरो राजा सुचन्द्रोऽस्य प्रसादतः।

कवचस्य प्रसादेन मान्धाता पृथिवीपतिः।।

प्रचेता लोमशचैव यतः सिद्धो बभूवः ह।

यतो हि योगिनां श्रेष्ठः सौभरिः पिप्पलायनः।।

यदि स्यात् सिद्धकवचः सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्।

महादानानि सर्वाणि तपांसि च व्रतानि च।

निश्चितं कवचस्यास्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।।

इदं कवचमज्ञात्वा भजेत् कालीं जगत्प्रसूम्।

शतलक्षप्रजप्तोऽपि न मंत्रः सिद्धिदायकः।।



## Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

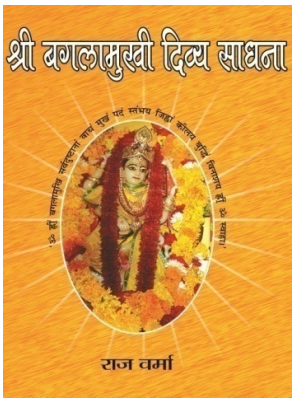


To purchase these books contact to Hari Publications on given numbers.Mob- 09027154151, 09897035137